कबीर की साखियाँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» जाति नहीं, ज्ञान पूछो

प्रश्न 1 (आसान). कबीर के अनुसार साधु/अच्छे इंसान को पहचानने के लिए क्या पूछना चाहिए?
उत्तर – ज्ञान

प्रश्न 2 (आसान). दोहे की पहली पंक्ति है–"जाति न पूछो साध की, ____ पूछ लीजिए ज्ञान।"
उत्तर – साध की

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर कोई व्यक्ति जाति की बातें बहुत करे, लेकिन सही सलाह/ज्ञान न दे–कबीर की सीख के हिसाब से हमें क्या करना चाहिए?
उत्तर – हमें जाति के आधार पर नहीं, उसके ज्ञान/समझ के आधार पर फैसला करना चाहिए और जो ज्ञान नहीं है उसकी बात कम माननी चाहिए।

प्रश्न 4 (कठिन). स्कूल में सम्मान का आधार क्या होना चाहिए–जाति, या ज्ञान? एक छोटा कारण लिखिए कबीर की साखी के आधार पर।
उत्तर – सम्मान का आधार ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि कबीर कहते हैं "जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।" यानी पहचान ज्ञान और समझ से तय होगी।

» तरवार की नहीं, म्यान की कीमत

प्रश्न 5 (आसान). कबीर 'तरवार' के जरिए किस बात पर ज़ोर देते हैं?
उत्तर – असली गुण–ज्ञान/मेहनत/सही काम–पर।

प्रश्न 6 (आसान). 'म्यान' किस तरह की चीज़ का प्रतीक माना जाता है?
उत्तर – बाहरी आवरण/दिखावा।

प्रश्न 7 (मध्यम). यदि कोई व्यक्ति बहुत दिखावा करता हो पर काम में ईमानदार न हो, तो कबीर के अनुसार हम क्या करेंगे?
उत्तर – हम केवल दिखावे को देखकर कीमत नहीं लगाएंगे; उसके असली काम और गुण देखकर निर्णय करेंगे।

प्रश्न 8 (कठिन). कबीर की सीख 'गुण देखो, दिखावा नहीं' को 'आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक' से जोड़कर 4-5 पंक्तियों में समझाइए।
उत्तर – गाली/बात भले एक ही हो, लोग उसे पलटकर कई तरह का मतलब बना देते हैं। उसी तरह बाहरी बातों को घुमा-फिराकर इंसान को जज करना आसान है। कबीर कहते हैं कि असली पहचान बाहर की भाषा/रूप से नहीं, अंदर के गुणों–ज्ञान और सही आचरण–से होती है।

» एक है–उलटने पर अनेक

प्रश्न 9 (आसान). कबीर के अनुसार 'एक' क्या है?
उत्तर – सत्य/धर्म का मूल भाव–जो असल में एक ही होता है।

प्रश्न 10 (आसान). 'उलटत होइ अनेक' में 'उलटने' का अर्थ क्या समझना चाहिए?
उत्तर – सत्य को समझने की दिशा/नज़रिए का बदल जाना, जिससे भ्रम बनें।

प्रश्न 11 (मध्यम). कबीर "कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक" क्यों कहते हैं?
उत्तर – क्योंकि सत्य एक है; उसे उलटकर/भ्रम में पढ़कर अनेक अर्थ बनाना सही नहीं।

प्रश्न 12 (कठिन). एक ही बात को अलग-अलग लोग अलग-अलग क्यों समझ लेते हैं? 'उलटने' को कारण से जोड़कर लिखिए।
उत्तर – क्योंकि हर व्यक्ति अपने मन की प्रवृत्ति, स्वार्थ, डर या अंधश्रद्धा के कारण नज़रिए को उलट देता है; फिर वही बात मूल सत्य की बजाय अलग-अलग बहानों/मतलबों से जोड़ दी जाती है।

» उलटिए नहीं–वही एक की एक

प्रश्न 13 (आसान). "वही एक की एक" का मतलब क्या है?
उत्तर – सत्य/मूल-भाव को स्थिर और एक ही तरह समझना; बार-बार अर्थ नहीं पलटना।

प्रश्न 14 (आसान). कबीर 'उलटिए नहीं' क्यों कहते हैं?
उत्तर – भ्रम में दिशा बदलने और गलत मोड़ लेने से बचने के लिए।

प्रश्न 15 (मध्यम). किस स्थिति में 'आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक' वाला नुकसान होता है?
उत्तर – जब हम मूल बात को पकड़ने की जगह अपने हिसाब से अर्थ/दृष्टि बदल देते हैं, तब अर्थ कई तरह के भटकाव में चला जाता है।

प्रश्न 16 (कठिन). अगर कोई कहे–"मैंने वही बात सही समझी है, बस उसका मतलब मैं अपने तरीके से निकालता हूँ"–तो कबीर की कसौटी पर सही-बात क्या होगी?
उत्तर – कसौटी यह है कि मूल सत्य की दिशा स्थिर रहे। 'वही एक की एक' तभी सही है जब अर्थ-मोड़ स्वार्थ या भ्रम से नहीं, सत्य की मूल भावना से टिका हो।

» माला-जीभि से बेहतर मुख-भीतर साधना

प्रश्न 17 (आसान). कबीर के अनुसार माला-जीभि वाली साधना कब अधूरी हो जाती है?
उत्तर – जब मन 'दहुँ दिसि' भटकता रहे और स्मरण का असर भीतर न हो।

प्रश्न 18 (आसान). 'मुख-भीतर साधना' का मतलब क्या है?
उत्तर – जब बोले गए शब्दों/स्मरण का ध्यान मन के भीतर जमकर एकाग्र हो जाए।

प्रश्न 19 (मध्यम). एक विद्यार्थी रोज़ जप करता है, पर पढ़ाई/खेल के विचार आते रहते हैं। कबीर के अनुसार उसकी साधना पूरी है या अधूरी? कारण लिखिए।
उत्तर – अधूरी है, क्योंकि मन बाहर के विचारों में भटकता है; कबीर के अनुसार मन के इधर-उधर जाने पर 'यह तौ सुमिरन नाहिं' होता है।

प्रश्न 20 (कठिन). इस साखी को 'बाहरी कर्म' और 'भीतरी साधना' के फर्क से जोड़कर 5-6 पंक्तियों में भावार्थ लिखिए।
उत्तर – कबीर माला/जीभ को केवल बाहरी साधन मानते हैं–यदि मन स्थिर न हो तो शब्द-उच्चारण कर्म बनकर रह जाता है। सच्चा स्मरण 'मुख-भीतर' है, जहाँ ध्यान मन में टिके। इसलिए मन की भटकन कम होना ही साधना की असली कसौटी है; तभी सुमिरन सार्थक माना जाता है।

» कागजी उपासना नहीं–मन की साध

प्रश्न 21 (आसान). कबीर किस बात को 'साधना' मानने में कमी बताते हैं–केवल शब्द बोलना या मन का साथ?
उत्तर – मन का साथ; केवल शब्द बोलना नहीं।

प्रश्न 22 (आसान). 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि पिफरै' का भावार्थ क्या है?
उत्तर – मन इधर-उधर भटकता है।

प्रश्न 23 (मध्यम). अगर जप करते समय मन शांत नहीं है और विचार बार-बार आते हैं, तो कबीर के अनुसार साधना कैसी बनेगी?
उत्तर – साधना पूरी नहीं होगी; वह सिर्फ बाहरी/कागजी जप जैसा बन जाएगा।

प्रश्न 24 (कठिन). कबीर के संदेश को जोड़कर लिखो: 'कागजी उपासना नहीं–मन की साध' का मतलब क्या है, और इसे रोज़ की साधना में कैसे लागू कर सकते हो?
उत्तर – मतलब दिखावे वाली उपासना नहीं; मन की एकाग्रता जरूरी है। रोज़ जप/नाम लेते समय मन भटके तो उसे धीरे से वापस नाम/स्मरण पर लाओ–तभी साधना असर करती है।

» कबीर के लिए मन-निरोध: आँखि में उड़ि पड़े

प्रश्न 25 (आसान). कबीर 'उड़ि पड़ै जब आँखि मैं' से मन-निरोध के बारे में क्या समझाते हैं?
उत्तर – भटकाव आते ही तुरंत सावधान होकर मन को रोककर ध्यान में टिकाना चाहिए।

प्रश्न 26 (आसान). 'जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय' का भाव क्या है?
उत्तर – असली दुश्मन बाहर नहीं; मन शांत/संतुलित हो तो दिक्कतें कम होती हैं।

प्रश्न 27 (मध्यम). 'या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय' में 'आपा' किस तरह की बात को रोकने को कह रहा है?
उत्तर – अहं/जिद/स्वार्थी घमंड जैसी 'अपनी ही' चाह को छोड़ने को, ताकि दया बढ़े।

प्रश्न 28 (कठिन). अगर कोई बच्चा कहे–'मन भटक जाए तो कोई बात नहीं, बाद में देख लेंगे'–तो कबीर की इस साखी के आधार पर उसे क्या जवाब दोगे?
उत्तर – कबीर कहते हैं मन भटकते ही उसे तुरंत पकड़ो, जैसे आँख में उड़ जाए तो तुरंत सावधानी होती है; बाद में सुधार की जगह त्वरित मन-निरोध जरूरी है।

» मन की शीतलता और आपा का त्याग

प्रश्न 29 (आसान). कबीर के अनुसार असली बैर कहाँ होता है–बाहर या भीतर?
उत्तर – भीतर; जो मन सीतल हो तो बैर नहीं रहता।

प्रश्न 30 (आसान). "आपा को डारि दे" में आपा का अर्थ क्या है?
उत्तर – घमंड-जिद की पकड़/अहंकार।

प्रश्न 31 (मध्यम). अगर मन गरम हो जाए तो दया क्यों कम पड़ने लगती है?
उत्तर – क्योंकि गरमी के साथ अहं/जिद (आपा) बढ़ती है, मन कठोर हो जाता है और सामने वाले के लिए नरमी घट जाती है।

प्रश्न 32 (कठिन). एक ही स्थिति में दो बच्चों का जवाब अलग क्यों होता है–एक झगड़ा बढ़ाता है, दूसरा शांति रखता है?
उत्तर – क्योंकि एक ने मन सीतल रखा और आपा त्याग दिया, इसलिए दया से जवाब दिया; दूसरे ने मन को गरम होने दिया और आपा संभालने की कोशिश की, इसलिए बात तकरार बन गई।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लो आपके स्कूल में दो व्यक्ति आ रहे हैं। एक बहुत ऊँची जाति की बात करता है, पर पढ़ाई/समझाने में उलझा देता है। दूसरा साधारण परिचय देता है, लेकिन किसी नियम को आसान उदाहरण से समझा देता है। कबीर के संदेश "जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान" के अनुसार आप किसे सुनेंगे और क्यों?

› कबीर की सीख पहचान की कसौटी तय करती है–जाति नहीं, ज्ञान/समझ।
› पहले व्यक्ति का व्यवहार: बहुत जाति की बातें, पर ज्ञान/समझ स्पष्ट नहीं।
› दूसरे व्यक्ति का व्यवहार: नियमों को सही और आसान तरीके से समझाना–यानी ज्ञान।
› इसलिए दूसरे व्यक्ति की बात मानना चाहिए, क्योंकि पहचान ज्ञान से बनती है।

उत्तर – आप दूसरे व्यक्ति की बात सुनेंगे, क्योंकि कबीर कहता है साधु/अच्छा इंसान जाति से नहीं, ज्ञान और समझ से

पहचाना जाता है।

उदाहरण 2. कबीर के दोहे "मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान" के आधार पर लिखिए–किस तरह के गुणों को महत्व देना चाहिए और किस तरह के दिखावे को नहीं। साथ में एक उदाहरण भी दीजिए।

› पहले दोहे का सीधा मतलब समझो: तलवार का मोल करो, म्यान को ऐसे ही छोड़ दो।

› बताओ कि यहाँ 'तलवार' किसके प्रतीक की तरह काम कर रही है–अंदर के गुण (ज्ञान, समझ, मेहनत, सही आचरण)।

› बताओ कि 'म्यान' किसके प्रतीक की तरह है–बाहरी दिखावा, ढकोसला, रंग-रूप।

› फिर एक स्कूल/घर का उदाहरण जोड़ो और दिखाओ कि वहाँ किस चीज को असली कीमत मिली और किसे नहीं।

उत्तर – कबीर कहते हैं कि हमें इंसान की "तलवार" यानी उसके अंदर के गुण–ज्ञान, समझ, सही काम और व्यवहार–की कीमत लगानी चाहिए। "म्यान" यानी बाहर का आवरण, दिखावटी चाल-चलन या केवल सुंदर बोल–उससे सच्चा मूल्य तय नहीं होता। उदाहरण: जो बच्चा कॉपी बहुत चमकदार रखता है लेकिन जवाब गलत देता है/वादा तोड़ता है, उसे केवल बाहरी साफ-सफाई पर सम्मान देना कबीर के हिसाब से गलत है; असली सम्मान मेहनती, सही ज्ञान वाले व्यवहार को देना चाहिए।

उदाहरण 3. कबीर की साखी "आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक" के आधार पर बताइए–अगर लोग एक ही धार्मिक उपदेश को अपने स्वार्थ के अनुसार इस्तेमाल करें, तो 'अनेक' कैसे हो जाते हैं?

› पहले "एक" समझो: उपदेश/सत्य का मूल भाव एक होता है–सेवा, प्रेम, संयम जैसी अच्छाई की राह।

› फिर "उलटने" पहचानो: जब लोग नज़रिए को स्वार्थ/डर/दिखावे की तरफ मोड़ देते हैं, तब वे मूल भाव को अलग दिशा में पढ़ लेते हैं।

› अंत में "अनेक" परिणाम लिखो: वही उपदेश कभी तर्कों से ठगने का बहाना बनता है, कभी बाहरी कर्म दिखाने का हथियार, कभी डर फैलाने का कारण–इस तरह अर्थ अनेक हो जाते हैं।

› कबीर की सलाह लगाओ: इसलिए कबीर कहते हैं–"नहिं उलटिए"–सत्य को सीधी दिशा में, ज्ञान की तरह समझो।

उत्तर – अगर लोग एक ही उपदेश को स्वार्थ/डर/दिखावे के हिसाब से पढ़ते हैं, तो वे मूल भाव को बदलकर उससे अलग-अलग मतलब निकालने लगते हैं। उसी वजह से "एक" सत्य "उलटने" पर "अनेक" अर्थों में बिखर जाता है–और कबीर चेताते हैं कि नज़रिए/दिशा मत उलटो, वही एक की एक मानो।

उदाहरण 4. कबीर की "नहिं उलटिए, वही एक की एक" वाली बात को एक छात्र के उदाहरण से समझाइए: अगर कोई छात्र 'सत्य' की शिक्षा को सिर्फ बोलने वाली बात मानकर, गलत काम छिपाने लगे, तो कबीर के अनुसार उसकी गलती क्या है?

› पहले देखें 'मूल बात' क्या है–सत्य/धर्म का भाव एक है, उसे स्थिर रखना है।

› फिर समझें 'उलटना' क्या होता है–सत्य की शिक्षा को टेढ़े तरीके से अपने फायदे के हिसाब से मोड़ देना।

› अब परिणाम बताइए–जब दिशा बदलती है, तो भ्रम से सही अर्थ नहीं रहता; व्यवहार गलत हो जाता है।

› कबीर के अनुसार सही तरीका–सत्य को अंदर से मानकर उसी दिशा में एकनिष्ठ रहना।

उत्तर – कबीर के अनुसार छात्र की गलती यह है कि वह सत्य की मूल शिक्षा को 'सिर्फ बोलने' जैसा बनाकर उसके व्यवहार वाला अर्थ ही उलट देता है। कबीर कहते हैं–"उलटिए नहीं"; सत्य वही एक की एक है–उसे स्थिर मानकर एकनिष्ठता से चलना चाहिए, तभी भ्रम/गलत मोड़ नहीं आता।

उदाहरण 5. कबीर की साखी के आधार पर समझाइए कि "माला तो कर में पिफरै, जीभि पिफरै मुख माँहि" और "मनुवाँ तो दहुँ दिसि पिफरै, यह तौ सुमिरन नाहिं" से कबीर क्या संदेश देते हैं?

› पहले भाग में बताओ: माला का घूमना और जीभ का उच्चारण–यह बाहरी क्रिया है

› फिर विरोध वाला भाग समझो: अगर मन दाएँ-बाएँ/इधर-उधर भटके तो स्मरण का असर अंदर नहीं हुआ माना जाएगा

› अंत में निष्कर्ष लिखो: कबीर के अनुसार साधना 'मुख-भीतर' यानी मन की एकाग्रता से पूरी होती है

उत्तर – कबीर संदेश देते हैं कि केवल हाथ में माला घुमाना और जीभ से शब्द बोलते रहना पर्याप्त नहीं है। अगर मन 'दहुँ-दिसि' भटकता रहे, तो वह सच्चा सुमिरन नहीं माना जाएगा; सच्ची साधना 'मुख-भीतर' यानी भीतर मन की एकाग्रता और स्थिरता से जुड़ी है।

उदाहरण 6. मान लो कोई बच्चा रोज़ ठीक समय पर 'राम-राम' जप करता है और रोज़ माला भी फेरता है, लेकिन जप के दौरान उसके दिमाग में बार-बार खेल/टीवी/झगड़े के विचार आते रहते हैं। कबीर की दृष्टि से बताओ–क्या यह "सच्ची साधना" होगी? कारण भी लिखो।

› कबीर की पहली बात पहचानो: मन का इधर-उधर भटकना साधना के रास्ते में बाधा है
› दूसरी बात जोड़ो: मन साथ नहीं हो तो जप केवल उच्चारण बन जाता है
› इस केस में ध्यान भटक रहा है (खेल/टीवी/झगड़े के विचार), इसलिए मन एकाग्र नहीं है
› निष्कर्ष निकालो: कबीर के अनुसार यह 'कागजी'/बाहरी साधना है, 'मन की साध' नहीं

उत्तर – कबीर की दृष्टि से यह सच्ची साधना नहीं होगी, क्योंकि जप के दौरान मन बार-बार भटक रहा है। 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि पिफरै' वाली स्थिति में 'यह तौ सुमिरन नाहिं'–यानी सिर्फ शब्द बोलना/माला फेरना ही काफी नहीं है; मन का साथ जरूरी है।

उदाहरण 7. मान लो एक साधक को जप करते समय बार-बार ख्याल आता है–"मैंने आज ज्यादा कर लिया, तारीफ मिलेगी।" अब कबीर की "आँखि में उड़ पड़े" वाली सीख के हिसाब से साधक क्या करे और क्यों?

› सबसे पहले पहचानो कि ये ख्याल मन की उड़ान है–यह प्रलोभन है, सुस्ती नहीं।
› जैसे आँखि में कुछ उड़ पड़े तो नजर नहीं हटती, वैसे ही साधक अपने ध्यान को तुरंत वापस जप/साधना पर ले आए।
› ख्याल से बहकर "आपा" (अहं/तारीफ की चाह) को बढ़ने मत दो–इसे मन से डाँटो, रोककर छोड़ो।
› फिर दया/समभाव की दिशा में मन टिकाओ, क्योंकि कबीर कहते हैं 'आपा को डारि दे, दया करै सब कोय'।

उत्तर – साधक को ख्याल आते ही तुरंत ध्यान वापस साधना पर लाना चाहिए, ताकि मन भटककर अहं/तारीफ की चाह ("आपा") में न चला जाए। यही 'आँखि में उड़ पड़े' वाली त्वरित सतर्कता–मन-निरोध–है।

उदाहरण 8. कक्षा में एक दोस्त ने मज़ाक किया। पहले तुम गुस्से में आ जाते हो और जवाब देने लगते हो। कबीर की इन दो पंक्तियों के अनुसार तुम्हें क्या करना चाहिए और क्या बदलाव आएगा?

› पहले यह समझो कि बाहर बैरी नहीं–मन गरम होने से लड़ाई बनती है। यानी "मन सीतल" करना पहला कदम है।
› फिर "आपा" पहचानो: जिद/घमंड/रुतबा बचाने की इच्छा कहाँ से आ रही है, उसे रोकना है–"आपा को डारि दे"।
› अब दया का व्यवहार चुनो: ताना पलटने की बजाय शांति से बात/जवाब देना।
› नतीजा देखो: मन नरम हुआ तो संबंध सुधरेंगे और झगड़ा बढ़ेगा नहीं।

उत्तर – तुम्हें मन को शांत ("मन सीतल") रखना है, जिद/घमंड ("आपा") छोड़ना है, और ताने पर पलटकर लड़ने की बजाय दया से शांति से जवाब देना है। इससे झगड़ा नहीं बढ़ेगा और रिश्ते सुधरेंगे।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- उत्तर लिखते समय दोहे की 1 पंक्ति "जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान" जरूर जोड़ो।
- उत्तर में 'तरवार=असली गुण' और 'म्यान=बाहरी दिखावा' ज़रूर लिखो।
- बोर्ड-स्टाइल उत्तर में 'एक=सत्य' और 'उलट=नज़रिए का भ्रम' जरूर लिखना।
- कबीर की इस पंक्ति का भाव लिखो: 'भ्रम में अर्थ/दिशा न बदलना'।
- भावार्थ में लिखो: बाह्य जप पर्याप्त नहीं; मन की एकाग्रता (भीतरी साधना) जरूरी।
- कबीर की पंक्तियाँ लिखकर भावार्थ जरूर जोड़ो–'मन' केंद्र है।
- बिंब "आँखि में उड़ पड़े" का भाव लिखना (तुरंत सावधानी/तुरंत मन रोकना)।
- पंक्तियों का भाव लिखो: बैर भीतर की गरमी से, आपा = अहं/जिद।

एक नज़र में रिवीज़न

› - "जाति न पूछो... पूछ लीजिए ज्ञान"

› तरवार=गुण, म्यान=दिखावा; कीमत गुणों की
› एक सत्य; उलटोगे तो अनेक–सीधा समझो।
› - मूल एक: 'उलटिए नहीं–वही एक की एक'
› - मन भटके तो जप अधूरा: मुख-भीतर एकाग्रता ही सच्ची साधना
› - मन भटके तो जप भी अधूरा
› भटकाव = आँख में उड़ना–तुरंत रोककर मन टिकाओ
› मन सीतल + आपा त्याग = दया सबको